कद्दू वर्गीय सब्जियों में लगनें वाले प्रमुख कीट एवं उनका नियंत्रण

कृषि कुंभ (जनवरी, 2023),
खण्ड 02 भाग 08, पृष्ठ संख्या 18–20

कद्दू वर्गीय सब्जियों में लगनें वाले प्रमुख कीट एवं उनका नियंत्रण

रवि कुमार रजक, अरविन्द कुमार,
शोध छात्र, कीट विज्ञान विभाग
आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविघालय कुमारगंज,
अयोध्या, उतर प्रदेश, भारत।

Email Id: ravikumarrajak0106@gmail.com

परिचय

कद्दू वर्गीय सब्जियाँ भारत में कुल सब्जी उत्पादन का एक महत्वपूर्ण सब्जी हैं जो कि हमे भोजन के साथ–साथ महत्वपूर्ण पोषक तत्वो जैसे कि विटामिन व खनिज तत्व भी प्रदान करती हैं। मैदानी भूमियों में कद्दूवर्गीय सब्जियों की खेती ग्रीष्म व वर्षा ऋतु के दोनो मौसम में की जाती हैं और जायद ऋतु की सब्जियों में कद्दू वर्गीय सब्जियों का प्रमुख योगदान होता है कद्दू वर्गीय सब्जियों के अन्तर्गत मुख्यतः कद्दू, लौकी, खीरा, ककड़ी, तोरई एवं करेला इत्यादि प्रमुख हैं। इस कुल की सब्जियों में विभिन्न प्रकार के कीटों का प्रकोप होता है। जिससे इनकी पैदावारी बहुत प्रभावित हो जाती है। अतः इन सब्जियों की अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए इनके हानिकारक कीटों को पहचान कर उनका नियंत्रण करना आवश्यक हो जाता है।

कद्दू की फल मक्खी कीट :

लक्षण एवं हानि

यह कद्दू जाति की सब्जी वाली फसलों कें फलों पर आक्रमण करने वाला कीट हैं। इसके मैंगट छोटे फलों को अधिक नुकसान करते हैं। इसके प्रकोप करेला एवं तोरइ की फसलों में आसानी से देखे जा सकते हैं। इसके वयस्क एवं शिशु (मैगट) कीट दोनों ही पौधों को नुकसान पहुचातें हैं। इसकी वयस्क कीट मटर कें दानें कें आकार कें फलों को खाकर कर नुकसान पहुचातें हैं। और मादा कीट फल कें छिलकें कें नीचें अण्डें देते हैं अण्डे से शिशु कीट (मैगट) निकलतें हैं और फल के अन्दर गूदे को खाकर लगभग 75–80 दिनों में पूर्णतः बडे हो जाते हैं। इसके शिशु कीट फलों से बाहर निकल कर मिट्टी के अन्दर आ जातें हैं। और प्यूपा बनाते हैं फिर 7–11 दिनों बाद उनसें वयस्क मक्खी निकलकर फिर से सब्जियों कें अन्दर अण्डें देती हैं।

नियंत्रण :

- ❖ खेत की सफाई रखना चाहिए।
- ❖ गर्मियों में खेत की जुताई करनी चाहिए ताकि जमीन के अंदर छिपे कीट उपर आकर मर जाए।
- ❖ समय से बुबाई करना चाहिए।
- ❖ फलों की तुड़ाई सही समय पर करना चाहिए।
- ❖ फल मक्खी से ग्रसित फलों को एकत्रित कर जमीन में दबा देना चाहिए।

- ❖ पौधों पर राख का बुरकाव करते रहना चाहिए।
- ❖ खेत में रात के समय प्रकाश ट्रैप लगाये। और उसके नीचे दवा मिलाकर पानी रखें।
- ❖ फल मक्खी के प्रकोप को नियंत्रित करने के लिए 1.5 मि. ली. मिथाइल यूजीनाल, 2 मिली.क्विनालफॉस 25 ई.सी. को 1 लीटर पानी में मिलाकर घोल तैयार कर ले। किसी तरह तैयार घोल की 250 मि. ली. की दर से किसी साफ बर्तन में लेकर, 8 से 10 जगह प्रति हेक्टेयर की दर से खेत मे रख देना चाहिए।

कद्दू का लाल भृंग कीट :

लक्षण एवं हानि

यह चमकीले लाल रंग के कीट होते हैं इसकें वयस्क एवं सूंडी कीट दोनों ही पौधों कें अंकुरित भाग एवं नयी पत्तियों कों खाकर छलनी जैसा बना देते हैं। ग्रसित पत्तियाँ फट जाती हैं। या इसकें प्रकोप से कई बार फसल पूरी तरह नष्ट हो जाती हैं। एवं पौधे की बढवार रुक जाती है। जिस्से फूल एवं फल बहुत कम संख्या में लग पाते है। जिस्से किसान को भारी नुकसान होता है।

नियंत्रण :

- ❖ खेत की सफाई रखना चाहिए।
- ❖ गर्मियों में खेत की जुताई करनी चाहिए ताकि जमीन के अंदर छिपे कीट उपर आकर मर जाए।
- ❖ समय से बुबाई करना चाहिए।
- ❖ फलों की तुड़ाई सही समय पर करना चाहिए।
- ❖ इस कीट से ग्रसित फलों को एकत्रित कर जमीन में दबा देना चाहिए।
- ❖ पौधों पर राख का बुरकाव करते रहना चाहिए।
- ❖ कद्दूवर्गीय सब्जियों के खेतों में निम्बोली के पाउडर का बुरकाव करते रहना चाहिए।
- ❖ अगर इस कीट का प्रयोग अधिक होने लगे तो डाईमेथोएट 30 ई.सी.की 500 मिली. मात्रा या मिथाइल डेमेटान 25 ई.सी. की 500 मिली. मात्रा को प्रति हेक्टेयर की दर से पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।

हड्डा भृंग कीट :

लक्षण एवं हानि

इस कीट के शिशु पीले रंग के तथा प्रौढ़ भूरे लाल रंग के होते हैं। इनके पीठ पर 13–26 काले रंग के गोल धब्बे होते है। इसकी मादा कीट पत्तों पर पीले रंग के अण्डे झुण्ड में देती हैं। इस कीट के शिशु एवं प्रौढ पत्तियों को खाते हैं। जिस्से पत्तियों की संरचना जालीदार बन जाती है। तो फूल और फल कम लगते है जिस्से किसान को भारी नुकसान होता है।

नियंत्रण :

- ❖ गर्मियों में खेत की जुताई करनी चाहिए ताकि जमीन के अंदर छिपे कीट उपर आकर मर जाए।
- ❖ समय से बुबाई करना चाहिए।
- ❖ फलों की तुड़ाई सही समय पर करना चाहिए।
- ❖ खेत को खरपतवारों से मुक्त रखना चाहिए।
- ❖ खेत में गिरी हुई पत्तियों, को एवं प्रभावित फल इत्यादि को इकट्ठा कर जलाकर नष्ट करते रहना चाहिए।
- ❖ इस कीट के प्रकोप की प्रारंभिक अवस्था में कीट के अण्डों, शिशुओं तथा वयस्कों को पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए।

❖ अगर इस कीट का प्रयोग अधिक होने लगे तो डाईमेथोएट 30 ई.सी.की 500 मिली. मात्रा या मिथाइल डेमेटान 25 ई.सी. की 500 मिली. मात्रा को प्रति हेक्टेयर की दर से पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।

लीफ माइनर कीट :

लक्षण एवं हानि

इस कीट के वयस्क पीले रंग के एवं शिशु सूक्ष्म बिना पैर के नारंगी पीले रंग के होते हैं। इस कीट के शिशु पत्तियों में सांप के आकार की सुरंगें बनाकर अंदर से क्लोरोफिल खाते हैं। जिससे पौधे के हरे भाग में कमी होने के कारण प्रकाश संश्लेषण की क्रिया खत्म हो जाती है जिससे उत्पादन में बहुत कमी हो जाती है। जिस्से किसान को बहुत ज्यादा नुकसान होता है।

नियंत्रण :

❖ खेत को खरपतवारों से मुक्त रखना चाहिए।

❖ इस कीट के प्रकोप की प्रारंभिक अवस्था में कीट के अण्डों, शिशुओं तथा वयस्कों को पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए।

❖ पौधों पर राख का बुरकाव करते रहना चाहिए।

❖ कद्दूवर्गीय सब्जियों के खेतों में निम्बोली के पाउडर का बुरकाव करते रहना चाहिए।

❖ इस कीट का प्रकोप सूखी भूमि पर अधिक होता है। अतः आवश्यकतानुसार समय–समय पर पानी देते रहना चाहिए।

❖ मित्र कीटों का संरक्षण करना चाहिए।

❖ यदि इस कीट का प्रकोप ज्यादा हो गया हो तो क्लोरेंट्रानिलिप्रोएल (कोराजन) 18. 5 एस.सी. की 0.5 मिली. को प्रति लीटर पानी में घोलकर पौधों पर छिड़कना चाहिए।

लाल मकड़ी (रेड स्पाइडर माइट) :

लक्षण एवं हानि

यह कीट छोटे आकार के लाल रंग के होते है इस वयस्क कीट के शरीर पर काले रंग के धब्बे होते हैं। इस कीट के शिशु एवं वयस्क कीट रस चूसकर पौधों को हानि पहुंचाते हैं। जिसके कारण इन पौधों की पत्तियाँ पीली पड़ने लगती हैं और पौधों की वृद्धि रुक जाती है। और शुष्क मौसम मे इस कीट का प्रकोप अधिक होता है। जिस्से किसान को बहुत ज्यादा नुकसान होता है।

नियंत्रण :

❖ खेत को खरपतवारों से मुक्त रखना चाहिए।

❖ कद्दूवर्गीय सब्जियों के खेतों में निम्बोली के पाउडर का बुरकाव करते रहना चाहिए।

❖ मित्र कीटों का संरक्षण करना चाहिए।

❖ कीट प्रतिरोधी किस्मों का चयन करें।

❖ फसल चक्र अपनाना चाहिए।

❖ इसके नियंत्रण के लिए स्पिरोमेसिफेन 240 एस.सी. की 200 मिली. मात्रा को 200 लीटर पानी में घोलकर पौधों पर छिड़कना चाहिए।